डेयरी व्यवसाय से हरेन्द्र साईं का जीवन हुआ खुशहाल

पशुपालक का नाम	:	श्री हरेन्द्र साईं
पिता का नाम	:	श्री मीरसिंह
उम्र	:	22 वर्ष
पता	:	सूरतपुरा, राजगढ़ (चूरू)
शिक्षा	:	बी.एस.सी.
मोबाइल	:	6350061977

डेयरी व्यवसाय से चूरू जिले के राजगढ़ तहसील के हरेन्द्र साईं ने चार चांद लगाए हैं, जिसकी सफलता की कहानी आसपास के क्षेत्र के लिए प्रेरणा का स्रोत तथा पशुपालन एवं डेयरी व्यवसाय को नए मुकाम तक पहुंचाने में सक्षम बनी है। पूर्व में प्राकृतिक वर्षा द्वारा परिवार के सदस्य अथक मेहनत के बावजूद मुश्किल से अपने परिवार का पालन पोषण किया करते थे और पशुपालन सिर्फ अपने परिवार के लिए दूध, घी व छाछ की आपूर्ति तक सीमित था। लेकिन इन्होंने बदलाव करने की ठानी और शुरुआत में दो–तीन गायों से डेयरी व्यवसाय को प्रारंभ किया, जिससे तेजी से मुनाफा मिलने लगा और फिर उसने मुड़ कर नहीं देखा और आगे बढ़ता गया। आज इनके पास 2 गाय, 6 भैंस, तथा 5 छोटे बड़े पशु हैं, जिसमें अच्छी नस्ल की गाय मुख्यतः दूध उत्पादन के लिए रखी है। दूध को पहले तो दूध वाले को दिया, परंतु अब अपने स्तर पर दूध वितरित करना प्रारंभ कर दिया। अब हरेन्द्र साईं अपने दूध का वितरण स्वयं करता है, जिससे अच्छी आमदनी प्राप्त हो जाती है और लगभग 40 लीटर दूध का वितरण प्रतिदिन हो जाता है। डेयरी व्यवसाय से उसकी मासिक आमदनी लगभग 30000 रूपये तक पहुंच जाती है। पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) से पशुपालन की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर हरेन्द्र साईं ने तो अपना जीवन बदल लिया है और आर्थिक रूप से मजबूत हो गया है। हरेन्द्र साईं ने ही अपने आप को लायक बनाया और अन्य पशुपालक भाइयों को आगे बढ़ने का रास्ता दिखाने का काम किया है।

पशुपालन व्यवसाय से सालाना दो लाख की बचत

पशुपालक का नाम	:	श्री जगदीप
पिता का नाम	:	श्री शेरसिंह
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	हमीरवास, राजगढ़ (चूरू)
शिक्षा	:	एम.ए.
मोबाइल	:	9636824629

जिंदगी कांटो का सफर है, हौंसला इसकी एक पहचान है, रास्ते पर सभी चलते हैं जो अपना रास्ता बनाए वही इंसान है। यह सफलता की कहानी ऐसे इंसान की है जो पहले पशुपालन से कोई तालुकात नहीं रखता था। लेकिन समय के साथ अपने परिवार को चलाने के लिए एक ऐसे व्यवसाय को चुना है जो आज के बेरोजगार लोगों के लिए प्रेरणा लेने वाला है। साधारण किसान परिवार से संबंध रखने वाले चूरू जिले के गांव हमीरवास (राजगढ़) के पशुपालक जगदीप के पास 3 बीघा बिरानी जमीन है। खेतों की सिंचाई का कार्य वर्षा के पानी पर निर्भर है। अच्छी बारिश होने पर खेतों से अच्छी फसल की पैदावार मिल जाती है। बारिश की स्थिति को देखते हुए घर खर्चा चलाने के लिए जगदीप ने पशुपालन का कार्य शुरू किया जो आज भी जारी है। वर्तमान में इनके पास 10 गाय, भैंस, बकरी व ऊंट हैं, जिनसे सालाना 2 लाख की बचत होती है। समय–समय पर डेयरी पालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षणों में भाग लेते रहते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिहरण दवा का उपयोग, टीकाकरण और खनिज लवण की कमी से पशुओं में होने वाले रोगों के बारे में जाना और अपने पशुओं को खनिज लवण खिलाना शुरू किया। जगदीप वर्तमान में डेयरी पालन कर खुशी खुशी अपने परिवार को चला रहे हैं और अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

लीलाधर ने उन्नत पशुपालन से अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत की

पशुपालक का नाम	:	श्री लीलाधर
पिता का नाम	:	श्री रामकिशन
उम्र	:	34 वर्ष
पता	:	हरपालु कुशाला, राजगढ़ (चूरू)
शिक्षा	:	7वीं पास
मोबाइल	:	7627069159

युवा लीलाधर ने बिना समय गवाएं समझदारी का परिचय देते हुए स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की सोची। गांव हरपालु कुशाला (राजगढ़) चूरू के साधारण से किसान परिवार के लीलाधर ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए और दूध की मांग को देखते हुए पशुपालन को व्यवसाय के लिए चुना। प्रारंभ में इन्होंने एक गाय से डेयरी व्यवसाय की शुरुआत की, धीरे–धीरे दुधारू गायों में इजाफा किया और कमाई के लिहाज से बड़े सपने न देखकर धीरे–धीरे अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। लीलाधर को डेयरी व्यवसाय को शुरू करने के लिए किसी की मदद या घर वालों को भी कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। इनकी दूरदर्शिता और मेहनत रंग लाई और आज इनके पास 5 भैंस, 4 गाय व 3 बकरियां हैं। गौवंश के पालन पोषण के लिए घर का खेत होने से कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। व्यवसाय की देखभाल में न केवल स्वयं बल्कि इनकी पत्नी भी पूरा सहयोग करती है। गायों से 60 लीटर दूध का उत्पादन होता है। इस व्यवसाय से विशुद्ध 1.70 लाख की वार्षिक आय प्राप्त करके आराम से जीवन यापन कर रहे हैं। पशु विज्ञान केंद्र, रतनगढ़, चूरू द्वारा समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण शिविरों से मार्गदर्शन प्राप्त कर टीकाकरण, कृमिनाशक दवाइयों और अन्य प्रकार की देखभाल स्वयं कर लेते हैं। स्वस्थ दूध उत्पादन उनकी डेयरी की पहचान बन गया है। पढ़े–लिखे बेरोजगार युवाओं के लिए लीलाधर एक प्रेरणा के स्रोत बने हैं।

मानाराम को रास आया भेड़ पालन

पशुपालक का नाम	:	श्री मानाराम
पिता का नाम	:	श्री दुर्गाराम
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	नैणासर, सरदारशहर (चूरू)
शिक्षा	:	अशिक्षित
मोबाइल	:	8505081638

बिरानी खेती, कम वर्षा और मानसून आधारित खेती के कारण पशुपालन किसानों की आजीविका का आधार है तथा भेड़ पालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख व्यवसाय के रूप में उभरा है। चूरू जिले के सरदारशहर तहसील के नैणासर गांव के निवासी मानाराम के पास 8 बीघा जमीन है जिस पर वह वर्षा आधारित खेती करते हैं। पर्याप्त आय नहीं होने के कारण भेड़ पालन को अपनी आय का स्रोत बनाया और पशु विज्ञान केंद्र रतनगढ़ (चूरू) से समय–समय पर व्यक्तिगत, दूरभाष और वैज्ञानिक विधियों से भेड़ पालन करने के प्रशिक्षण एवं टीकाकरण, संतुलित आहार, खनिज लवण मिश्रण, कर्मीहरण दवा का प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्नत तकनीक से भेड़ पालन प्रारंभ किया। इन्होंने शुरुआत 10 भेड़ से की थी। वर्तमान में उनके पास 100 भेड़ हैं। जिससे प्रति वर्ष 60 से 70 विक्रय करते हैं। एक मेमने के विक्रय से लगभग 4000 रूपये प्राप्त करते हैं। एक वर्ष में 70 से 80 किलो ऊन उत्पादन होता है। इस प्रकार मानाराम लगभग 2 से 3 लाख रुपए प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त कर लेते है। गांव में रोजगार के साधन कम होने पर भी मानाराम गांव में रहकर उन्नत तकनीक से भेड़ पालन करने का अच्छा उदाहरण दिया है।

वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर खुशहाल हुए सुमेरसिंह

पशुपालक का नाम	:	श्री सुमेर सिंह
पिता का नाम	:	श्री हुक्माराम
उम्र	:	62 वर्ष
पता	:	हमीरवास, राजगढ़ (चूरू)
शिक्षा	:	बी.ए.
मोबाइल	:	9413084190

चूरू जिले के गांव हमीरवास के निवासी सुमेर सिंह समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, रतनगढ़, चूरू द्वारा आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण पशुओं की देखभाल, दूध उत्पादन में वृद्धि, संतुलित आहार आदि की जानकारी प्राप्त कर अपने पशुपालन को व्यवसाय में अपनाया है। प्रशिक्षण से सुमेर सिंह को काफी फायदा हुआ है। प्राथमिक उपचार स्वयं कर लेते हैं, जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं भी लेते हैं। वर्तमान में सुमेर सिंह के पास 5 भैंस तथा 1 गाय हैं। अब वे 1. 90 लाख रुपये की वार्षिक आय से खुशहाल जीवन जी रहे है।